एम.ए. हिन्दी

भाषा विज्ञान

प्रथम सेमेस्टर (चतुर्थ प्रश्न-पत्र)

एवं

हिन्दी भाषा

द्वितीय सेमेस्टर (चतुर्थ प्रश्न-पत्र)

संपादक - डॉ. रमेश टण्डन

एम.ए. हिन्दी
भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा
प्रथम सेमेस्टर (चतुर्थ प्रश्न-पत्र) द्वितीय सेमेस्टर (चतुर्थ प्रश्न-पत्र)
संपादक
डॉ. रमेश टण्डन

भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा

ISBN- 978-93-89989-46-5

●

प्रकाशक

वैभव प्रकाशन

अमीनपारा चौक, पुरानी बस्ती रायपुर (छत्तीसगढ़)

दूरभाष : 0771-4038958, मो. 94253-58748

e-mail : sahityavaibhav@gmail.com

www.vaibhavprakashan.com

आवरण सज्जा : कन्हैया साहू

प्रथम संस्करण : May 2020

मूल्य : 500.00 रुपये

कॉपी राइट : लेखकाधीन

●

BHASHA VIGYAN EVAM HINDI BHASHA

BY : DR. RAMESH TANDAN

Published by

Vaibhav Prakashan

Amin Para, Purani basti

Raipur, Chhattisgarh (India)

First Edition : May 2020

Price : Rs. 500.00

(प्रस्तुत पुस्तक के विभिन्न अध्यायों में लिखित पाठ्य सामग्री उसके लेखक/संकलनकर्ता के द्वारा एम ए हिन्दी में अध्ययनरत छात्रों के हित के लिए विभिन्न किताबों अथवा नेट से संकलित की गई है। अपने पाठ की पूर्णता के लिए इस पुस्तक के अध्याय लेखकों ने मूल किताबों अथवा परवर्ती संदर्भ/ शोध ग्रंथों अथवा नेट से उद्धरण अथवा उदाहरण लिए हैं, अतः उन मूल किताबों अथवा परवर्ती संदर्भ/शोध ग्रंथों अथवा नेट के क्रमशः लेखकों अथवा संपादकों/शोध छात्रों अथवा अपलोडर्स का सर्वश्रेष्ठ आभार जिनकी पाठ्य सामग्री को यहाँ उद्धृत किया जा सका है। मौलिक तथ्यों /परिभाषा आदि में फेरबदल के लिए इस पुस्तक के संपादक अथवा प्रकाशक जिम्मेदार नहीं होंगे अपितु अध्याय लेखक स्वयं जिम्मेदार होंगे तथा किसी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र खरसिया (छ.ग.) होगा।)

एम. ए. हिन्दी –

भाषा विज्ञान

(प्रथम सेमेस्टर – चतुर्थ प्रश्न–पत्र)

एवं

हिन्दी भाषा

द्वितीय सेमेस्टर (चतुर्थ प्रश्न–पत्र)

(छत्तीसगढ़ स्थित अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय बिलासपुर के अन्तर्गत विभिन्न महाविद्यालयों में संचालित एम ए हिन्दी प्रथम सेमेस्टर चतुर्थ प्रश्न–पत्र (भाषा विज्ञान) एवं एम ए हिन्दी द्वितीय सेमेस्टर चतुर्थ प्रश्न–पत्र (हिन्दी भाषा) के नवीनतम सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित एवं अन्य विश्वविद्यालयों के लिए भी एम. ए. हिन्दी की पाठ्य–पुस्तक)

संपादक

डॉ0 रमेश टण्डन

विभागाध्यक्ष (सहायक प्राध्यापक– हिन्दी)

महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय

खरसिया, जिला– रायगढ़ (छ.ग.)

वैभव प्रकाशन

रायपुर (छ.ग.)

भाग – 2

19 हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, वैदिक संस्कृत की विशेषताएँ	प्रो. संध्या पाण्डेय	183
20 लौकिक संस्कृत की विशेषताएँ, पाली की विशेषताएँ	श्री घनश्याम टण्डन	189
21 प्राकृत की विशेषताएँ, अपभ्रंश की विशेषताएँ	प्रो. दिनेशकुमार संजय	198
22 शौरसेनी की विशेषताएँ, अर्द्ध मागधी की विशेषताएँ	श्रीमती आशा भारद्वाज	202
23 आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण	डॉ. दिनेश श्रीवास	208
24 पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी का भौगोलिक विस्तार व उनकी विशेषताएँ	डॉ. दिनेश श्रीवास	216
25 बिहारी, पहाड़ी तथा इनकी बोलियों का भौगोलिक विस्तार तथा विशेषताए	डॉ. दिनेश श्रीवास	224
26 खड़ी बोली, ब्रज, अवधी का भौगोलिक विस्तार तथा उनकी विशेषताएँ	डॉ. शिवदयाल पटेल	230
27 उपसर्ग, समास	डॉ. रमेश कुमार टण्डन	241
28 प्रत्यय	डॉ. रमेश कुमार टण्डन	255
29 लिंग, वचन और कारक व्यवस्था के सन्दर्भ में हिन्दी के संज्ञा, सर्वनाम	प्रो. करुणा गायकवाड	269
30 लिंग, वचन और कारक व्यवस्था के सन्दर्भ में हिन्दी के विशेषण, क्रिया	डॉ. रेखा दुबे	284
31 हिन्दी वाक्य–रचना, पदक्रम और अन्विति	श्रीमती आशा भारद्वाज	297
32 राष्ट्रभाषा, राजभाषा और सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी	श्रीमती अलका यतिन्द्र यादव	312
33 मातृभाषा, माध्यम भाषा, संचार भाषा; हिन्दी की संवैधानिक स्थिति	श्रीमती अलका यतिन्द्र यादव	319
34 देवनागरी लिपि की विशेषताएँ और मानकीकरण	श्रीमती किरण शर्मा	327
35 हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधाएँ – आंकड़ा संसाधन, शब्द संसाधन, वर्तनी शोधक, मशीनी अनुवाद	श्री मदन मलहौत्रा	340
36 हिन्दी और मानकीकरण	प्रो. वन्दना रानी खाखा	350

27

उपसर्ग, समास

डॉ0 रमेशकुमार टण्डन*

सेमेस्टर – II प्रश्नपत्र– IV (हिन्दी भाषा)
इकाई – 03 हिन्दी का भाषिक स्वरूप
हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था– खण्ड्य, खण्ड्येत्तर, हिन्दी शब्द रचना– उपसर्ग, प्रत्यय, समास। रूपरचना– लिंग, वचन और कारक व्यवस्था के सन्दर्भ में हिन्दी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया रूप। हिन्दी वाक्य–रचना, पदक्रम और अन्विति।

उपसर्ग

उपसर्ग = उप (समीप) + सर्ग (सृष्टि करना)। किसी शब्द के समीप आकर नया शब्द बनाना उपसर्ग है। जो शब्दांश सार्थक शब्दों से पहले जुड़कर उनके अर्थ को बदल देते हैं या उनकी विशेषता प्रकट करते हैं, उन्हें उपसर्ग (prefix) कहते हैं। संस्कृत एवं संस्कृत से उत्पन्न भाषाओं में उस अव्यय या शब्द को उपसर्ग कहते हैं जो कुछ शब्दों के आरम्भ में लगकर उनके अर्थों का विस्तार करता है अथवा उनमें कोई विशेषता उत्पन्न करता है।

---

*जन्म : 03 जनवरी 1975, ग्राम– फूलबंधिया (रायगढ़), माता : श्रीमती फूलकुँवर टण्डन, पिता : श्री कौशलप्रसाद टण्डन, पत्नी : श्रीमती पूर्णिमा टण्डन, योग्यता : एम. ए. (हिन्दी, अंग्रेजी) सेट, पी–एच. डी., प्रकाशन : 1. काव्य संग्रह 'पीड़ा' 2014 में जयपुर से प्रकाशित, 2. पुस्तक 'आधुनिक कालीन हिन्दी साहित्य में नारी–अस्मिता का धरातलीय सच' का फरवरी 2020 में संपादन, अन्य : अन्तर्राष्ट्रीय शोध–पत्रिकाओं में 25 शोध–पत्र एवं राष्ट्रीय शोध–पत्रिकाओं में 04 शोध–पत्र प्रकाशित, 29 राष्ट्रीय शोध–संगोष्ठियों/कार्यशाला में सहभागिता, 03 अन्तर्राष्ट्रीय शोध–संगोष्ठियों/कार्यशाला में सहभागिता, 04 किताबों में चैप्टर लेखक, पत्र–पत्रिकाओं में कविता/लेख एवं अन्य उल्लेखनीय कार्यों के लिए लगातार छपना। सम्प्रति : महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय खरसिया में विभागाध्यक्ष (सहायक प्राध्यापक) – हिन्दी, मो0 नं0 9685671975, ई मेल– rameshktandan@gmail.com

उपसर्ग के भेद– 1. हिन्दी उपसर्ग, 2. संस्कृत उपसर्ग, 3. उर्दू उपसर्ग, 4. अंग्रेजी उपसर्ग।

हिन्दी उपसर्ग

हिन्दी उपसर्ग प्रायः संस्कृत उपसर्गों के अपभ्रंश होते हैं और तद्भव शब्दों के पूर्व आते हैं।

1. **अ** – अभाव, निषेध; उदाहरण– अथाह, अचेत। अपवाद– अनगिनती, अनघेरा, अनमोल, अनहित।
2. **अध** – आधा; उदाहरण– अधकच्चा, अधमरा, अधपका।
3. **उन** – एक कम; उदाहरण– उन्नीस, उन्तीस, उनचास, उनसठ, उनहत्तर।
4. **औ** – हीन, निषेध; उदाहरण– औगुन, औघट।
5. **दु** – बुरा, हीन; उदाहरण– दुकाल, दुबला।
6. **नि** – रहित; उदाहरण– निकम्मा, निखरा, निडर, निरोगी, निहत्था।
7. **बिन** – निषेध, अभाव; उदाहरण– बिनजाने, बिन–ब्याहा।
8. **भर** – पूरा, ठीक; उदाहरण– भरपेट, भरपूर
9. **सु**– अच्छा; उदाहरण– सुडौल, सुजान।
10. **पर** – दूसरा, बाद का; उदाहरण– परलोक, परोपकार, परसर्ग।
11. **कु** – बुरा; उदाहरण– कुचैला, कुचक्र।

संस्कृत उपसर्ग

1. **अति**– अधिक, उस पार, ऊपर; जैसे– अतिरिक्त, अतिशय, अत्यंत, अत्याचार। (हिन्दी में 'अति', इसी अर्थ में स्वतंत्र शब्द के रूप में भी प्रयुक्त होता है, जैसे– "अति बुरी होती है।"
2. **अधि**– ऊपर, स्थान में, मुख्य, श्रेष्ठ; जैसे– अधिकार, अधिराज, अधिष्ठाता, अध्यात्म, अधिपति, अध्यक्ष, अध्ययन।
3. **अनु**– पीछे, समान; जैसे– अनुकरण, अनुक्रम, अनुग्रह, अनुचर, अनुज, अनुताप, अनुरूप, अनुशासन, अनुस्वार।
4. **अप**– बुरा, हीन, विरूद्ध, अभाव; जैसे– अपकीर्ति, अपभ्रंश, अपमान, अपराध, अपशब्द, अपहरण।
5. **अभि**– ओर, पास, सामने; जैसे– अभिप्राय, अभिमुख, अभिमान, अभिलाष, अभिसार, अभ्यागत, अभ्यास, अभ्युदय, (अधिक) अभिनन्दन।
6. **अव**– नीचे, हीन, अभाव; जैसे– अवगुण, अवनत, अवलोकन। (खाली)– अवगणना, अवतरण।
7. **आ**– तक, ओर, समेत, उलटा; जैसे– आकर्षण, आकार, आकाश, आक्रमण, आगमन, आबालवृद्ध, आरम्भ; (पर्यन्त)– आकंठ, आजन्म।
8. **उत्**– ऊपर, ऊँचा, श्रेष्ठ; जैसे– उत्कर्ष, उत्कंठा, उत्तम, उद्यम, उद्देश्य, उन्नति, उत्पन्न, उल्लेख।
9. **उप**– निकट, सदृश, गौण; जैसे– उपकार, उपदेश, उपनाम, उपनेत्र, उपभेद, उपयोग, उपवन, उपवेद।
10. **दुर्, दुस्**– बुरा, कठिन, दुष्ट; जैसे– दुराचार, दुर्गुण, दुर्गम, दुर्जन, दुर्दशा, दुर्दिन, दुर्बल, दुर्लभ, दुष्कर्म, दुष्प्राप्य।
11. **नि**– भीतर, नीचे, बाहर; जैसे– निकृष्ट, निदान, निदर्शन, निपात, नियुक्त, निवास, निरूपण; (अत्यन्त)– निमग्न, निबंध।
12. **निर्, निस्**– बाहर, निषेध; जैसे– निराकरण, निर्गम, निरपराध, निर्भय, निर्वाह, निश्चल, निर्दोष, नीरोग, निरंजन, निराशा। (हिन्दी में यह उपसर्ग बहुधा –'नि' हो जाता है, जैसे– निडर, निधन।)
13. **परा**– पीछे, उलटा; जैसे– पराक्रम, पराजय, परामर्श, परावर्तन।
14. **परि**– आसपास, चारों ओर, पूर्ण; जैसे– परिक्रमा, परिजन, परिणाम, परिधि, परिपूर्ण, परिमाण, परिवर्तन, परिणय, पर्याप्त, परिश्रम, परिवार।
15. **प्र**– अधिक, आगे, ऊपर; जैसे– प्रकाश, प्रख्यात, प्रचार, प्रबल, प्रभु, प्रयोग, प्रसार, प्रस्थान, प्रलय, प्रकोप।
16. **प्रति**– विरूद्ध, सामने, एक–एक; जैसे– प्रतिकूल, प्रतिक्षण, प्रतिध्वनि, प्रतिकार, प्रतिवादी, प्रत्यक्ष, प्रत्युपकार, प्रत्येक।
17. **वि**– भिन्न, विशेष, अभाव; जैसे– विकास, विज्ञान, विदेश, विधवा, विवाद, विशेष, विस्मरण, विख्यात, विनती, विफल, विसंगति।
18. **सम्**– अच्छा, साथ, पूर्ण; जैसे– संकल्प, संगम, संग्रह, संतोष, सन्यास, संयोग, संस्कार, संरक्षण, संहार, संस्कृत, संगीत।
19. **सु**– अच्छा, सहज, अधिक; जैसे– सुकर्म, सुकृत, सुगम, सुलभ, सुशिक्षित, सुदूर, स्वागत।

उर्दू उपसर्ग

1. **अल**– निश्चित; जैसे– अलगरज, अलवत्ता।
2. **ऐन**– ठीक, पूरा; जैसे– ऐनजवानी, ऐनवक्त।
3. **कम**– थोड़ा, हीन; जैसे– कमउम्र, कमकीमती, कमजोर, कमबख्त, कमहिम्मत।
4. **खुश**– अच्छा; जैसे– खुशबू, खुशदिल, खुश–किस्मत।
5. **गैर**– भिन्न, विरूद्ध; जैसे– गैर–मुल्क, गैरवाजिब, गैरसरकारी।
6. **दर**– में; जैसे– दरअसल, दरकार, दरखास्त, दर हकीकत।
7. **ना**– अभाव; जैसे– नादान, नाराज, नालायक।
8. **फी**– में, पर; जैसे– फिलहाल (फी + अल + हाल) अर्थात् हाल में।
9. **ब**– ओर, में, अनुसार; जैसे– बनाम, ब–इजलास, बदस्तूर, बदौलत।
10. **बद**– बुरा; जैसे– बदकार, बदकिस्मत, बदनाम, बदबू, बदमाश, बदहजमी।
11. **बर**– ऊपर; जैसे– बरखास्त, बरदास्त, बरतरफ, बरवक्त, बराबर।
12. **बा**– साथ; जैसे– बाजाबता, बाकायदा, बातमीज।
13. **बिल**– साथ; जैसे– बिलकुल, बिलमुकता।
14. **बिला**– बिना; जैसे– बिलाकुसूर, बिलाशक।
15. **बे**– बिना; जैसे– बेईमान, बेचारा (हिन्दी में बिचारा), बेतरह, बेवकूफ, बेरहम। (हिन्दी में बेकाम, बेचैन, बेजोड़, बेमन, बेडौल, बेसुर।)
16. **ला**– बिना, अभाव; जैसे– लाचार, लावारिस, लाजवाब, लामजहब।
17. **सर**– मुख्य; जैसे– सरकार, सरताज (हिन्दी में सिरताज), सरदार, सरनाम (हिन्दी में सिर–नामा), सरखत, सरहद।
18. **हम**– साथ, समान; जैसे– हमउम्र, हमदर्दी, हमनाम, हमराह, हमवजन।
19. **हर**– प्रत्येक; जैसे– हररोज, हरमाह, हरचीज, हरसाल, हर–तरह।

अंग्रेजी उपसर्ग

1.सब – सब इंस्पेक्टर।
2.डिप्टी – डिप्टी कलेक्टर।
3.हाफ – हाफटाइम, हाफपैंट।

समास

दो या अधिक शब्दों का परस्पर संबंध बताने वाले शब्दों अथवा प्रत्ययों का लोप होने पर उन दो या अधिक शब्दों से जो एक स्वतंत्र शब्द बनता है, उस शब्द को सामासिक शब्द या समस्तपद कहते हैं और उन दो या अधिक शब्दों का जो संयोग होता है वह समास कहलाता है। दूसरे शब्दों में, समास का तात्पर्य है– 'संक्षिप्तीकरण'। समास का शाब्दिक अर्थ होता है छोटा रूप, जब दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर जो नया और छोटा शब्द बनता है उसे समास कहते हैं। अर्थात् समास वह क्रिया है जिसके द्वारा हिन्दी में कम–से–कम शब्दों में अधिक–से–अधिक अर्थ प्रकट किया जाता है। समास होने के बाद विभक्तियों के चिन्ह (परसर्ग) लुप्त हो जाते हैं। सामासिक शब्दों के बीच के सम्बन्धों स्पष्ट करना समास विग्रह कहलाता है। विग्रह के पश्चात् सामासिक शब्दों का लोप हो जाता है। जैसे, राजपुत्र – राजा का पुत्र। समास में दो पद होते हैं। पहले पद को पूर्वपद और दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं।

पं0 कामताप्रसाद गुरु के 'हिंदी व्याकरण' में, संयोग होने वाले शब्दों की प्रधानता के आधार पर समास के मुख्यतः चार भेद किए गए हैं–

1. जिस समास में पहला पद प्रधान होता है, अव्ययीभाव समास कहलाता है।
2. जिस समास में दूसरा पद प्रधान होता है, तत्पुरुष समास कहलाता है।
3. जिस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं, द्वन्द्व समास कहलाता है।
4. जिस समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता, बहुब्रीहि समास कहलाता है।

तत्पुरूष समास का उपभेद करते हुए उन्होंने एक भेद समानाधिकरण तत्पुरूष अथवा कर्मधारय दिया। इस कर्मधारय का पुनः दो भेद किया– 1. विशेषतावाचक कर्मधारय, 2. उपमावाचक कर्मधारय। विशेषतावाचक कर्मधारय का पुनः सात भेद करते हुए उसके छठवें भेद को संख्यापूर्वपद अथवा द्विगु समास के रूप में नामकरण किया।

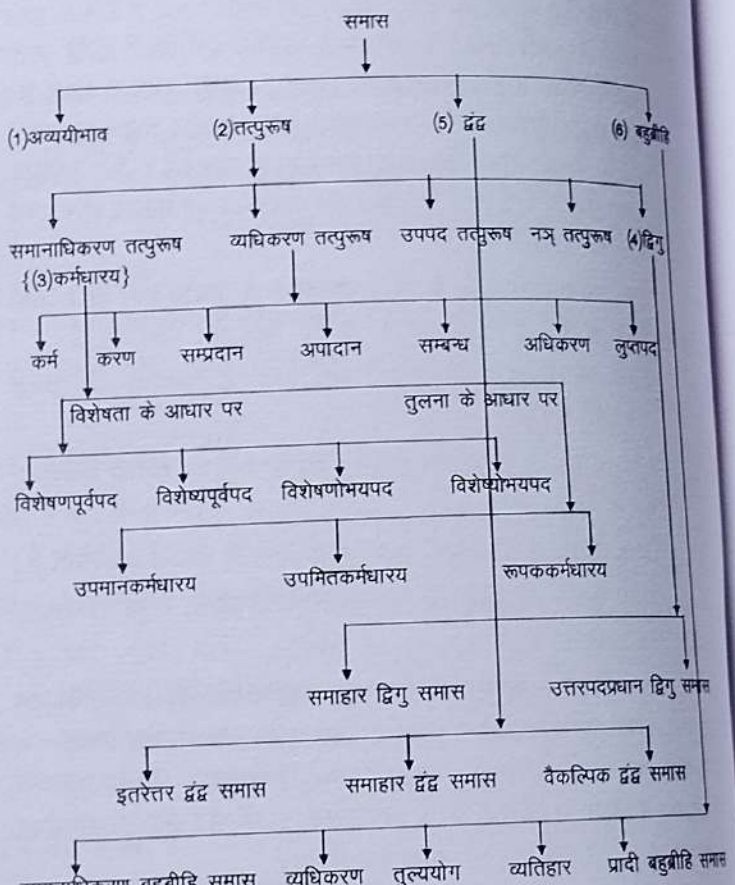
प्रयोग की दृष्टि से समास के तीन भेद हैं–

1.संयोगमूलक समास, 2. आश्रयमूलक समास, 3. वर्णनमूलक समास।

पदों की प्रधानता की दृष्टि से समास के चार भेद हैं–

1. पूर्वपद प्रधान – अव्ययीभाव
2. उत्तरपद प्रधान – तत्पुरूष, कर्मधारय, द्विगु
3. दोनों पद प्रधान – द्वंद्व
4. दोनों पद अप्रधान– बहुब्रीहि

समास के मुख्यतः छः भेद एवं उनके उपभेद इस प्रकार हैं–



विभिन्न समास उदाहरण सहित–

अव्ययीभाव समास (Adverbial Compound)– जिस समास का पहला शब्द प्रधान होता है, वह अव्ययीभाव समास होता है। इसमें पहला पद अव्यय होता है।

समास	समास विग्रह
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
प्रतिक्षण	क्षण– क्षण
प्रत्यक्ष	आँखों के प्रति
आजीवन	जीवन भर
भरपेट	पेट भर कर
निस्संदेह	संन्देह के बिना
साफ–साफ	बिल्कुल साफ
बेखटक	बिना खटक के
अनुरूप	रूप के योग्य
हर–घड़ी	घड़ी–घड़ी

तत्पुरूष समास (Determinative Compound)– इसमें प्रथम पद विशेषण होने के कारण गौण तथा उत्तर पद विशेष्य होने के कारण प्रधान होता है। इसके आठ भेद हैं।

1. **कर्म तत्पुरूष**– चिन्ह 'को'।

स्वर्गगत	स्वर्ग को गत
शरणागत	शरण को आगत
यशप्राप्त	यश को प्राप्त
जनप्रिय	जन को प्रिय
मरणासन्न	मरण को आसन्न
वनगमन	वन को गमन

2. **करण तत्पुरूष**– चिन्ह 'से, द्वारा'।

रेखांकित	रेखा से अंकित
तुलसीकृत	तुलसी द्वारा कृत

मनमानी	मन से मानी
मुँहमांगा	मुँह से मांगा
स्वरचित	स्व द्वारा रचित
मनचाहा	मन से चाहा
आँखोंदेखी	आँखों से देखी
भुखमरी	भूख से मरी

3.**सम्प्रदान तत्पुरूष**– चिन्ह 'के लिए'।

सत्याग्रह	सत्य के लिए आग्रह
शयनकक्ष	शयन के लिए कक्ष
गुरूदक्षिणा	गुरू के लिए दक्षिणा
रसोईघर	रसोई के लिए घर
प्रयोगशाला	प्रयोग के लिए शाला
देशभक्ति	देश के लिए भक्ति
विद्यालय	विद्या के लिए आलय
स्नानघर	स्नान के लिए घर

4.**अपादान तत्पुरूष**– चिन्ह 'से' (अलग होना)।

जीवनमुक्त	जीवन से मुक्त
धनहीन	धन से हीन
ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त
पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट
देशनिकाला	देश से निकाला
कामचोर	काम से जी चुराने वाला

5.**सम्बन्ध तत्पुरूष**– चिन्ह 'का, के, की'।

विश्वासपात्र	विश्वास का पात्र
माखनचोर	माखन का चोर
रामकहानी	राम की कहानी
पवनपुत्र	पवन का पुत्र

अमचूर	आम का चूर
राष्ट्रपति	राष्ट्र का पति
राजपुत्र	राजा का पुत्र
पितृभक्त	पिता का भक्त
राजनीति	राजा की नीति
मूर्तिपूजा	मूर्ति की पूजा

6.**अधिकरण तत्पुरूष**– चिन्ह 'में, पर'।

आत्मविश्वास	आत्मा पर विश्वास
धर्मवीर	धर्म में वीर
आपबीती	आप पर बीती
स्वर्गवास	स्वर्ग में वास
सिरदर्द	सिर में दर्द
दानवीर	दान देने में वीर

7. **अलुक तत्पुरूष**– इस तत्पुरूष में पहले पद का कारक चिन्ह का लोप न होकर उसी में समाहित होना पाया जाता है।

युधिष्ठिर	युद्ध में स्थिर
खेचर	आकाश में चरने वाला
वनचर	वन में चरने वाला

8.**नञ् तत्पुरूष**– इसमें पहला पद निषेधवाचक रहता है।

अछूत	जो छूत न हो
अनादि	न आदि
असभ्य	न सभ्य
अनन्त	न अन्त
असम्भव	न सम्भव

9.**उपपद तत्पुरूष समास**– इस समास में उत्तरपद, स्वतंत्र भाषा के रूप में प्रयुक्त न होकर प्रत्यय के रूप में प्रयोग में आता है।

कृतज्ञ, कृतघ्न, जलद आदि।

10. **लुप्तपद तत्पुरूष समास**– इस समास में कारक चिन्ह अर्थात् लुप्त न होकर पूरे पद सहित लुप्त हो जाता है।

दहीबड़ा	दही में डूबा हुआ बड़ा
ऊँटगाड़ी	ऊँट से चलने वाली गाड़ी
पवनचक्की	पवन से चलने वाली चक्की

कर्मधारय समास (Appositional Compound)– जब समास पदों के खण्डों में परस्पर विशेष्य–विशेषण भाव अथवा उपमान–उपमेय भाव सम्बन्ध होता है, कर्मधारय समास होता है।

वचनामृत	वचन रूपी अमृत
चन्द्रमुख	चन्द्र जैसा मुख
महावीर	महान् वीर
महादेव	महान् देव
सज्जन	सत् जन
लाल मिर्च	लाल जो मिर्च
महाराज	महान् जो राजा
परमात्मा	परम है जो आत्मा

विशेषण पूर्वपद कर्मधारय समास–

नीलगाय	नीली गाय
पीताम्बर	पीत अम्बर

विशेष्य पूर्वपद कर्मधारय समास–

कुमारश्रमणा	कुमारी श्रमणा

विशेषणोभयपद कर्मधारय समास–

नील – पीत
सुनी – अनसुनी
कहनी – अनकहनी

विशेष्योभयपद कर्मधारय समास–

आमगाछ
वायस–दम्पति

उपमानकर्मधारय समास– इस समास में उपमान पहला पद और उपमेय दूसरा पद होता है।

विद्युतचंचला	विद्युत जैसी चंचला

उपमितकर्मधारय समास– इस समास में उपमेय पहला पद और उपमान दूसरा पद होता है।

अधर–पल्लव	अधर पल्लव के समान
नरसिंह	नर सिंह के समान

रूपककर्मधारय समास– इस समास में एक का दूसरे पर आरोप होता है।

मुखचन्द्र	मुख ही है चन्द्रमा

द्विगु समास (Numeral Compound)– इसमें पूर्व पद संख्यावाचक होता है।

द्विगु	दो गौओं का समूह
अष्टाध्यायी	आठ अध्यायों का समूह
नवरात्र	नव रातों का समूह
त्रिफला	तीन फलों का समूह
चवन्नी	चार आनों का समूह
तिरंगा	तीन रंगों का समाहार
दोपहर	दो पहरों का समाहार

समाहार द्विगु समास– जहाँ समाहार (समुदाय, इकट्ठा होना, समेटना) हो, वहाँ यह समास होता है।

त्रिलोक	तीन लोकों का समाहार
पंचवटी	पाँच वटों का समाहार

उत्तरपद प्रधान द्विगु समास–

1.उत्पन्न के अर्थ में–

दुमाता	दो माँ का
दुसूती	दो सूतों के मेल का

2.उत्तरपद पर जोर देना–

पंचप्रमाण	पांच प्रमाण
पंचहत्थड	पांच हत्थड

द्वन्द्व समास (Copulative Compound)– इसमें दोनों पद प्रधान होते हैं। विग्रह करने पर 'और/अथवा' का प्रयोग होता है।

माता–पिता	माता और पिता
धर्माधर्म	धर्म और अधर्म
सुख–दुख	सुख और दुख
राधा–कृष्ण	राधा और कृष्ण

इतरेतर द्वंद्व समास– समास विग्रह करने पर 'और' शब्द आता है। सामासिक पद बहुवचन में हो जाता है।

माँ–बाप	माँ और बाप
ऋषि–मुनि	ऋषि और मुनि

समाहार द्वंद्व समास– दोनों पद 'और' समुच्चयबोधक से जुड़े होने पर भी अलग–अलग अस्तित्व न रख कर समूह का बोध कराते हैं।

दालरोटी	दाल और रोटी
हाथपाँव	हाथ और पाँव

वैकल्पिक द्वंद्व समास– दोनों पदो के मध्य विकल्पसूचक अव्यय (या, अथवा) छिपे होते हैं। दोनों पद विपरीतार्थक होते हैं।

पाप–पूण्य	पाप या पूण्य
भला–बुरा	भला या बुरा
थोड़ा–बहुत	थोड़ा या बहुत

बहुब्रीहि समास (Attributive Compound)– इसमें दोनों ही पद गौण होते हैं तथा किसी तीसरे पद के बारे में कुछ कहते हैं। यह तीसरा पद प्रधान होता है।

पीताम्बर	पीला है अंबर (वस्त्र) जिसका अर्थात् श्रीकृष्ण
त्रिलोचन	तीन है लोचन (नेत्र) जिसके अर्थात् शिव
चतुर्भुज	चार हैं भुजाएँ जिसकी अर्थात् विष्णु

सुलोचना	सुंदर है लोचन जिसके – वह स्त्री
गजानन	गज के समान आनन है जिसका – गणेश
चतुर्मुख	चार हैं मुख जिसके – ब्रम्हा
दिगम्बर	दिशाएँ हैं अंबर जिसकी – शंकर
दीर्घबाहु	दीर्घ है बाहु जिसकी – विष्णु
महेश	महान है जो ईश – शिव
पतझड	झड़ते हैं पत्ते जिसमें – विशेष ऋतु
कमलनयन	कमल के समान है नयन जिसके – विष्णु

समानाधिकरण बहुब्रीहि समास– इसके सभी पद में कर्त्ता कारक के चिन्ह होते हैं लेकिन सामासिक पद के द्वारा जो अन्य उक्त होता है वह कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण आदि विभक्तियों में भी उक्त हो जाता है।

प्राप्तोदक	प्राप्त है उदक जिसको
जितेंद्रियाँ	जीती गई इन्द्रियाँ हैं जिसके द्वारा
दत्तभोजन	दत्त है भोजन जिसके लिए
निर्धन	निर्गत है धन जिससे
नेकनाम	नेक है नाम जिसका
सतखंडा	सात है खण्ड जिसमें

व्यधिकरण बहुब्रीहि समास– इसमें पहला पद कर्त्ता कारक की विभक्ति का, उत्तर पद संबंध कारक या अधिकरण कारक की विभक्ति का होता है।

शूलपाणि	शूल है पाणि में जिसके
वीणापाणि	वीणा है पाणि में जिसके

तुल्ययोग बहुब्रीहि समास (सहबहुब्रीहि समास)– इसमें पूर्व पद 'सह' होता है।

सबल	जो बल के साथ है
सदेह	जो देह के साथ है
सपरिवार	जो परिवार के साथ है

व्यतिहार बहुब्रीहि समास– इसमें घात या प्रतिघात की सूचना मिलती है।

मुक्का–मुक्की	मुक्के–मुक्के से जो लड़ाई हुई
बाताबाती	बातों–बातों से जो लड़ाई हुई

प्रादी बहुब्रीहि समास – इसमें पूर्वपद उपसर्ग होता है।

बेरहम	नहीं है रहम जिसमें
निर्जन	नहीं है जन जहाँ

प्रयोग की दृष्टि से समास–

संयोगमूलक समास (संज्ञा समास) – इसमें दोनों पद संज्ञा होते हैं। जैसे, भाई–बहन, दिन–रात, माता–पिता।

आश्रयमूलक समास (विशेषण समास अथवा कर्मधारय समास)– इसमें प्रथम पद विशेषण होता है। जैसे, घनश्याम, शीशमहल, कच्चाकेला।

वर्णनमूलक समास– इसके अन्तर्गत अव्ययीभाव और बहुब्रीहि समास का निर्माण होता है। पूर्वपद अव्यय और उत्तरपद संज्ञा होता है। जैसे, यथाशक्ति, प्रतिमास, भरपेट, प्रत्येक।

सन्दर्भः–

1. पं0 कामता प्रसाद गुरू, हिंदी व्याकरण; काशी नागरी प्रचारिणी सभा, इंडियन प्रेस लिमिटेड प्रयाग, सं0 1984.
2. एजूकेशन, हरीश एकेडेमी, स्टडी मटेरियल.
3. www.mycoaching.in

♦●♦

"अगले जन्म में अच्छी जिंदगी पाने की ख्वाहिश में, यदि आप वर्तमान जिंदगी को ठीक से जीना नहीं चाहेंगे, तो पूर्व जन्म के अच्छे कर्मों के फलस्वरूप प्राप्त वर्तमान जिंदगी का क्या लाभ ?"

–डॉ. रमेश टण्डन फूलबंधिया

28

प्रत्यय

– डॉ0 रमेशकुमार टण्डन*

सेमेस्टर – II प्रश्नपत्र– IV (हिन्दी भाषा)
इकाई – 03 हिन्दी का भाषिक स्वरूप
हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था– खण्ड्य, खण्ड्येत्तर, हिन्दी शब्द रचना– उपसर्ग, प्रत्यय, समास। रूपरचना– लिंग, वचन और कारक व्यवस्था के सन्दर्भ में हिन्दी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया रूप। हिन्दी वाक्य–रचना, पदक्रम और अन्विति।

प्रत्यय वे शब्द हैं जो दूसरे शब्दों के अन्त में जुड़कर, अपनी प्रकृति के अनुसार, शब्द के अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं। प्रत्यय शब्द, दो शब्दों से मिलकर बना है – प्रति + अय। 'प्रति' का अर्थ 'साथ में, परंतु बाद में' और 'अय' का अर्थ 'चलने वाला' होता है। प्रत्यय वे शब्दांश है जो शब्द के अन्त में लगकर उसके अर्थ को बदल देते हैं। प्रत्यय के मुख्यतः दो भेद हैं–

1. कृत प्रत्यय (कृदन्त) – ये प्रत्यय क्रिया के धातु रूपों में लगकर संज्ञा, विशेषण आदि शब्द बनाते हैं।

2. तद्धित प्रत्यय – ये प्रत्यय संज्ञा, विशेषण, अव्यय आदि में

*जन्म : 03 जनवरी 1975, ग्राम– फूलबंधिया (रायगढ़), माता : श्रीमती फूलकुँवर टण्डन, पिता : श्री कौशलप्रसाद टण्डन, पत्नी : श्रीमती पूर्णिमा टण्डन, योग्यता : एम. ए. (हिन्दी, अंग्रेजी) सेट, पी–एच. डी., प्रकाशन : 1. काव्य संग्रह 'पीड़ा' 2014 में जयपुर से प्रकाशित, 2. पुस्तक 'आधुनिक कालीन हिन्दी साहित्य में नारी–अस्मिता का धरातलीय सच' का फरवरी 2020 में संपादन, अन्य : अन्तर्राष्ट्रीय शोध–पत्रिकाओं में 25 शोध–पत्र एवं राष्ट्रीय शोध–पत्रिकाओं में 04 शोध–पत्र प्रकाशित, 29 राष्ट्रीय शोध–संगोष्ठियों/कार्यशाला में सहभागिता, 03 अन्तर्राष्ट्रीय शोध–संगोष्ठियों/कार्यशाला में सहभागिता, 04 किताबों में चैप्टर लेखक, पत्र–पत्रिकाओं में कविता/लेख एवं अन्य उल्लेखनीय कार्यों के लिए लगातार छपना। सम्प्रति : महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय खरसिया में विभागाध्यक्ष (सहायक प्राध्यापक) – हिन्दी, मो0 नं0 9685671975, ई मेल– rameshktandan@gmail.com